

सविता सिंह

मैं तारों का एक घर

न जाने कितने तारे
मेरी आँखों में आ-आ कर ध्वस्त होते रहे हैं
उनकी तेज़ रोशनी
गहन ऊष्मा उनकी
आकर मेरी आँखों में बुझती रही हैं
और मैं इन तारों का
एक विशाल दीप्त घर बन गयी हूँ
जिसमें मनुष्यों की भांति ये मरने आते हैं

आज भी हर रात
एक तारा उतरता है मुझमें
हर रात उतना ही प्रकाश मरता है
उतनी ही ऊष्मा चली जाती है कहीं

अपने जैसा जीवन

Delhi, Radhakrishnan, 2001: 15
